संख्या-415/2017/185/22-2-2017-17(440)/2016

प्रेषक,

सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर,
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन।

सेवा में,

महानिरीक्षक,
कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवायें,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कारागार प्रशासन एवं सुधार अनुभाग-2 ***लखनऊ: दिनांक 09 जून, 2017***

विषय:- केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी ताहिर पुत्र श्री अहसान, निवासी-जनपद-मेरठ की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक अपने पत्र संख्या-44244-359/प्रोबेशन-3/2016(एम-17-11-2016) दिनांक-16-12-2016 का कृपया संदर्भ ग्रहण करें।

2- आपके उक्त पत्र द्वारा उपलब्ध कराये गये प्रस्तावानुसार केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी ताहिर पुत्र श्री अहसान, निवासी-मौ0 मौसमखानी कस्बा किठौर, थाना-किठौर, जनपद-मेरठ का रहने वाला है। पूर्व में बन्दी के दो भाई व मां की हत्या किये जाने को लेकर चल रही रंजिश के कारण बन्दी ने 08 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 09.02.1989 को अपरान्ह् लगभग 04:00 बजे रिवाल्वर, कट्टा, रायफल से गोलीमारकर 06 व्यक्तियों की हत्या की एवं 03 व्यक्तियों को घायल किया। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-241/1989 में भा0द0वि0 की धारा-302/149, 307/149, 449 के अन्तर्गत मा0 सत्र न्यायाधीश, मेरठ के आदेश दिनांक 28.08.2006 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी की अपील मा0 उच्च न्यायालय में लम्बित है। बन्दी के 07 सहअभियुक्त कारागार में निरूद्ध है तथा 01 सहअभियुक्त की दिनांक 17.08.2009 को अस्पताल में मृत्यु हो चुकी है। बन्दी द्वारा दिनांक 25.12.2015 तक 14 वर्ष 00 माह 01 दिन की अपरिहार सजा तथा 17 वर्ष 01 माह 10 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का जेल आचरण अच्छा है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है लेकिन प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में उल्लेख किया गया है कि बन्दी ने भाई व मां की हत्या किये जाने को लेकर चल रही रंजिश में 08 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 09.02.1989 को रिवाल्वर, कट्टा, रायफल से गोलीमारकर 06 व्यक्तियों की हत्या की एवं 03 व्यक्तियों को घायल करने का जघन्यतम अपराध कारित किया गया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी द्वारा किया गया अपराध व्यापक रूप से समाज को प्रभावित करता है इसकी पुष्टि जिला मजिस्ट्रेट ने 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी ताहिर पुत्र श्री अहसान को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है तथा सक्षम स्तर पर यह पाया गया कि बन्दी के 07 सहअभियुक्त अभी जेल में है तथा प्रोबेशन बोर्ड द्वारा रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है। अत: समय से पूर्व रिहाई का औचित्य स्थापित नहीं होता है।

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

http://shasanadesh.up.nic.in

3- उपरोक्त वर्णित तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि बन्दी ताहिर (बन्दी संख्या-13389) पुत्र श्री अहसान निवासी जनपद-मेरठ के फार्म-ए पर यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के प्राविधानों के अन्तर्गत सम्यक् विचारोपरान्त उसे मुक्ति का पात्र नहीं पाया गया है। अतएव उक्त बन्दी की लाइसेन्स पर मुक्ति शासन द्वारा अस्वीकार कर दी गयी है। तदनुसार उसके फार्म-ए पर शासन के आदेश अंकित करके एतद्द्वारा वापस लौटाया जा रहा है। कृपया प्राप्ति स्वीकार करते हुए शासन के निर्णय से बन्दी को तत्काल अवगत कराने का कष्ट करें।

संलग्नक: यथोपरि।

(बन्दी का फार्म-ए एवं समस्त पत्रादि सहित)

भवदीय,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

संख्या-415/2017/185(1)/22-2-2017 तद्दिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1- जिला मजिस्ट्रेट, मेरठ।
2- निजी सचिव, मा0 राज्यमंत्री, कारागार विभाग को मा0 मंत्री जी के सूचनार्थ।
3- वरिष्ठ अधीक्षक, केन्द्रीय कारागार, आगरा।
4- गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।
2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।

शासनादेश सख्या-415/2017/185/22-2-2017-17(440)/2016

दिनांक 09 जून, 2017 का संलग्नक

<u>सरकार के आदेश</u>

केन्द्रीय कारागार, आगरा में निरूद्ध सिद्धदोष बन्दी ताहिर पुत्र श्री अहसान, निवासी-मौ0 मौसमखानी कस्बा किठौर, थाना-किठौर, जनपद-मेरठ का रहने वाला है। पूर्व में बन्दी के दो भाई व मां की हत्या किये जाने को लेकर चल रही रंजिश के कारण बन्दी ने 08 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 09.02.1989 को अपरान्ह् लगभग 04:00 बजे रिवाल्वर, कट्टा, रायफल से गोलीमारकर 06 व्यक्तियों की हत्या की एवं 03 व्यक्तियों को घायल किया। उक्त अपराध हेतु बन्दी को सत्र परीक्षण संख्या-241/1989 में भा0द0वि0 की धारा-302/149, 307/149, 449 के अन्तर्गत मा0 सत्र न्यायाधीश, मेरठ के आदेश दिनांक 28.08.2006 द्वारा आजीवन कारावास के दण्ड से दण्डित किया गया। बन्दी की अपील मा0 उच्च न्यायालय में लम्बित है। बन्दी के 07 सहअभियुक्त कारागार में निरूद्ध है तथा 01 सहअभियुक्त की दिनांक 17.08.2009 को अस्पताल में मृत्यु हो चुकी है। बन्दी द्वारा दिनांक 25.12.2015 तक 14 वर्ष 00 माह 01 दिन की अपरिहार सजा तथा 17 वर्ष 01 माह 10 दिन की सपरिहार सजा भोगी गयी है। बन्दी का जेल आचरण अच्छा है। जिला प्रोबेशन अधिकारी, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक एवं जिला मजिस्ट्रेट द्वारा समयपूर्व रिहाई की संस्तुति की गयी है लेकिन प्रोबेशन बोर्ड की आख्या में उल्लेख किया गया है कि बन्दी ने भाई व मां की हत्या किये जाने को लेकर चल रही रंजिश में 08 सहअभियुक्तों के साथ मिलकर दिनांक 09.02.1989 को रिवाल्वर, कट्टा, रायफल से गोलीमारकर 06 व्यक्तियों की हत्या की एवं 03 व्यक्तियों को घायल करने का जघन्यतम अपराध कारित किया गया है। इस तरह के अपराधियों की समयपूर्व रिहाई से समाज में न्यायिक प्रणाली के बारे में विपरीत संदेश जायेगा। बन्दी द्वारा किया गया अपराध व्यापक रूप से समाज को प्रभावित करता है इसकी पुष्टि जिला मजिस्ट्रेट ने 05 बिन्दुओं की आख्या में की है। बन्दी द्वारा किये गये अपराध की गम्भीरता एवं जघन्यता के दृष्टिगत यू0पी0 प्रिजनर्स रिलीज आंन प्रोबेशन एक्ट, 1938 की धारा-2 के अन्तर्गत सिद्धदोष बन्दी ताहिर पुत्र श्री अहसान को फार्म-ए/लाईसेंस के आधार पर रिहा किये जाने की संस्तुति नहीं की गयी है तथा सक्षम स्तर पर यह पाया गया कि बन्दी के 07 सहअभियुक्त अभी जेल में है तथा प्रोबेशन बोर्ड द्वारा रिहाई की संस्तुति नहीं की गयी है। अत: समय से पूर्व रिहाई का औचित्य स्थापित नहीं होता है। उक्त के दृष्टिगत सम्यक् विचारोपरान्त शासन द्वारा बन्दी की फार्म-ए के आधार पर समयपूर्व रिहाई अस्वीकार किये जाने का निर्णय लिया गया है।

(सूर्य प्रकाश सिंह सेंगर)
संयुक्त सचिव।

http://shasanadesh.up.nic.in

1- यह शासनादेश इलेक्ट्रानिकली जारी किया गया है, अत: इस पर हस्ताक्षर की आवश्यकता नहीं है ।

2- इस शासनादेश की प्रमाणिकता वेब साइट http://shasanadesh.up.nic.in से सत्यापित की जा सकती है ।